5 अक्षरों का महत्व (गुणाकर मुले)

लेखक का परिचय

इनका जन्म महाराष्ट्र के विदर्भ इलाके में अमरावती जिले के सिंदी बुजरूक गांव में, 1935 ई. में हुआ था। शुरू में इनकी पढ़ाई गाँव के स्कूल में मराठी माध्यम से हुई। स्नातक और स्नातकोत्तर की पढ़ाई गणित विषय में इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई। आजीविका के लिए नौकरी करने की बजाय इन्होंने स्वतंत्र लेखन का रास्ता अपनाया और आज भी सक्रिय रूप से लेखन कर रहे हैं। इन्होंने मुख्य रूप से विज्ञान, विज्ञान का इतिहास, पुरातत्व, भारतीय इतिहास और संस्कृति पर लिखा है। इन विषयों से संबंधित अब तक इनकी करीब पैंतीस मौलिक पुस्तकें, तीन हज़ार से ऊपर लेख हिंदी में और करीब ढाई सौ लेख अंग्रेजी में प्रकाशित हो चुके हैं। 'अक्षर कथा', 'भारतीय इतिहास और संस्कृति', 'आकाश यात्रा', 'सौर मंडल' आदि इनकी महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। इनके उल्लेखनीय योगदान के लिए हिंदी अकादमी, दिल्ली; केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा; बिहार सरकार के राजभाषा विभाग; मराठी विज्ञान परिषद, मुंबई; और मेघनाथ साहा पुरस्कारों से इन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

पाठ का सार

मनुष्य को सभ्य और सुशिक्षित बनाने में अक्षर की खोज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये जो आसपास इतनी पुस्तकें नजर आती हैं, ये सब अक्षरों से ही बनी हुई हैं। दुनिया में न जाने कितने करोड़-अरब किताबें छप चुकी हैं। आज के युग में तो हम यह कल्पना तक नहीं कर सकते कि मानव को अक्षर-ज्ञान न हो। लोगों का मानना है कि अक्षरों को हम अनादि काल से जानते हैं और यह सब ईश्वर की देन है। परंतु वास्तव में देखा जाए तो यह ईश्वर की नहीं मानव की खोज है। विभिन्न बातों से पता लगाया जा चुका है कि कौन-से अक्षर की खोज कौन-से देश में हुई है। हमारी पृथ्वी लगभग पाँच अरब वर्ष पुरानी है। शुरू में इस पर जीवन नहीं था। धीरे-धीरे वनस्पति और फिर जानवरों का विकास हुआ। मनुष्य तो लगभग पाँच लाख साल पहले जन्मा और फिर निरंतर विकसित होता चला गया। शुरू में वह खानाबदोश का जीवन व्यतीत करता था। लगभग दस हजार साल पहले आदमी ने गाँव बसाकर खेती करना शुरू किया। उसने पहले पत्थर, फिर ताँबे और काँसे के औजार बनाए।

प्रागैतिहासिक यानी ज्ञात इतिहास से पहले काल में मनुष्य चित्रों के द्वारा अपने भाव व्यक्त करता था। इन चित्र-संकेतों से ही भाव-संकेत बने। जैसे—एक छोटा वृत्त, सूर्य, चारों ओर रेखाएँ, किरणें या धूप। अक्षरों की खोज तो लगभग छह हज़ार साल पहले हुई थी। मनुष्य ने जब से लिखना आरंभ किया तब से इतिहास शुरू हुआ, वह सभ्य कहलाने लगा। इतिहास पढ़कर ही पिछली बातों का पता लगाया जा सकता है। वास्तव में अक्षर की खोज ही मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है। इसी के कारण ही मानव जाति का तेजी से विकास हुआ। अक्षरों से लिपियाँ बनती हैं। हिंदी की लिपि देवनागरी है। यह हमारी राष्ट्रलिपि है। हिंदी के अलावा मराठी, नेपाली या संस्कृत व पालि भाषा की लिपि भी यही है। गुजराती और बंगला की लिपियाँ देवनागरी से मिलती-जुलती हैं। दक्षिण भारत की भाषाओं की लिपि भी देवनागरी की ही बहन है। उर्दू की लिपि फारसी है। भारत की सारी लिपियों का मूल एक ही लिपि है— 'ब्राह्मी लिपि'। भारत ही नहीं श्रीलंका की सिंहली, तिब्बत की तिब्बती लिपि भी ब्राह्मी लिपि से ही बनी है। बर्मा, थाईलैंड, कंबोडिया, जावा तथा सुमात्रा में भारतीयों के साथ ब्राह्मी लिपि भी वहाँ गई। पूरी दुनिया में लगभग 400 तरह की लिपियाँ पढ़ी व लिखी जाती हैं। उनमें से कुछ लिपियाँ जीवित हैं कुछ मृत। मृत लिपियों के नमूने संग्रहालयों में देखने को मिलते हैं। पहले लिपियों में अक्षर ज्यादा हुआ करते थे, अब कम हैं। हर अक्षर का स्वतंत्र ध्वनि चिन्ह होता है। अक्षरों के विकास का किस्सा बड़ा ही रोचक है। बाकी वस्तुओं की तरह ही लिपियों का विकास भी होता रहा।

शब्दार्थ : तादाद = संख्या (quantity, number)। **मूल** = जड़ (root)। **अनादिकाल** = जो सदा से चला आ रहा हो (eternal)। **ईश्वर** = भगवान (god, almighty)। **स्वयं** = अपने-आप (by own self)। **प्रागैतिहासिक मानव**

= इतिहास में वर्णित काल के पूर्व का मानव (prehistoric man)। **द्योतक** = सूचक (indicative)। **सिलसिला** = क्रम (sequence)। **पीढ़ी** = किसी जाति, कुल या व्यक्ति की वंश परंपरा की कोई कड़ी (clan, dynasty)। **दुनिया** = संसार (world)। **खोज** = आविष्कार (invention)। **इस्तेमाल** = प्रयोग (use)। **औज़ार** = हथियार (tool, weapon)। **ज़रिए** = के द्वारा, के माध्यम से (medium)। **वृत्त** = गोल (circle)। **चहुँ ओर** = चारों ओर (all around)। **काफी बाद में** = बहुत बाद में (after a long time)। **सिलसिले** = कार्यक्रम (sequence)। **मुश्किल** = कठिन (difficult)। **शुरू** = प्रारंभ (beginning)। **कौम** = जाति (caste, breed)। **इस्तेमाल** = प्रयोग (use)।

सप्रसंग व्याख्या तथा अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर

1. **(पृ. 30)** अक्षरों की खोज के साथ ही एक नए युग की शुरुआत हुई। आदमी अपने विचार और अपने हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा। तब से मानव को 'सभ्य' कहा जाने लगा। आदमी ने जब से लिखना शुरू किया तब से 'इतिहास' आरंभ हुआ। किसी भी कौम या देश का इतिहास तब से शुरू होता है जबसे आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लग जाते हैं। इस प्रकार इतिहास को शुरू हुए मुश्किल से छह हज़ार साल हुए हैं। उसके पहले के काल को 'प्रागैतिहासिक काल' यानी इतिहास के पहले का काल कहते हैं।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत भाग-1' में संकलित पाठ 'अक्षरों का महत्व' से ली गई हैं। इसके लेखक 'गुणाकर मुले' हैं। इन पंक्तियों में अक्षरों के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

व्याख्या : लेखक का कहना है कि अक्षर की खोज के साथ ही एक नए युग की शुरुआत हुई। अब आदमी के लिए अपने विचार और हिसाब-किताब को लिखकर याद रखना आसान हो गया। तभी से मानव 'सभ्य' कहलाने लगा। वास्तव में देखा जाए तो जब से आदमी ने लिखना शुरू किया है तभी से ही इतिहास का आरंभ हुआ। अब हर चीज़ को लिखकर रखने से उसे जानना आने वाली पीढ़ी के लिए आसान हो गया। यही कहा जा सकता है कि किसी भी कौम या देश का इतिहास तभी से शुरू माना जाता है जब से वह लिखने लगा। इन सब बातों को देखते हुए कहा जा सकता है कि इतिहास की शुरुआत मुश्किल से छह हज़ार साल पहले ही हुई है। ज्ञात इतिहास के पहले के काल को 'प्रागैतिहासिक काल' कहा जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि इतिहास की शुरुआत इसके बाद हुई।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

(क) पाठ व लेखक का नाम लिखिए?

उत्तर— पाठ—अक्षरों का महत्व, लेखक—गुणाकर मुले।

(ख) मानव सभ्य कब कहलाने लगा?

उत्तर— जब मानव अपने विचार और हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा, तब से वह सभ्य कहलाने लगा।

(ग) 'इतिहास' कब से प्रारंभ हुआ माना जाता है?

उत्तर— आदमी ने जब से लिखना शुरू किया तब से 'इतिहास' आरंभ हुआ माना जाता है।

(घ) इतिहास को शुरू हुए कितने साल हुए हैं?

उत्तर— इतिहास को शुरू हुए लगभग छह हजार साल हुए हैं।

(ङ) 'प्रागैतिहासिक काल' किसे कहते हैं?

उत्तर— इतिहास के पहले का काल 'प्रागैतिहासिक काल' कहलाता है।

2. **(पृ. 29)** प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के जरिए अपने भाव व्यक्त किए। जैसे पशुओं, पक्षियों, आदमियों आदि के चित्र। इन चित्र संकेतों से बाद में भाव-संकेत अस्तित्व में आए। जैसे, एक छोटे वृत्त के चहुँ ओर किरणों की द्योतक रेखाएँ खींचने पर वह 'सूर्य' का चित्र बन जाता था। बाद में यही चित्र 'ताप' या 'धूप' का द्योतक बन गया। इस तरह अनेक भाव-संकेत अस्तित्व में आए।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'वसंत भाग-1' में संकलित पाठ 'अक्षरों का महत्त्व' से ली गई हैं। इसके लेखक 'गुणाकर मुले' हैं। इन पंक्तियों में बताया गया है कि अक्षर ज्ञान से पहले किस प्रकार चित्रों के द्वारा अपने भाव व्यक्त किए जाते थे।

व्याख्या : लेखक का कहना है कि जब मनुष्य ने एक स्थान पर बसना शुरू कर दिया था और अक्षरों का ज्ञान नहीं हुआ था तब वह चित्रों के माध्यम से अपने भाव व्यक्त करता था। ये चित्र भाव संकेत के रूप में प्रयोग किए जाते थे। प्रागैतिहासिक काल में मुख्यत: पशुओं, पक्षियों और आदमियों के चित्र बनाए जाते थे। उदाहरण के तौर पर एक गोलाकार के चारों और किरणें छपाने का तात्पर्य हुआ सूर्य। बाद में यही चित्र धूप व ताप का सूचक बना। इस प्रकार अनेक भाव संकेतों का प्रयोग किया जाता था।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर—

(क) प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले अपने भाव कैसे व्यक्त किए?

उत्तर— प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के द्वारा अपने भाव व्यक्त किए।

(ख) भाव व्यक्त करने के लिए कौन-कौन से चित्र प्रयोग में लाए जाते थे?

उत्तर— भाव व्यक्त करने के लिए पशुओं, पक्षियों, आदमियों आदि के चित्र प्रयोग में लाए जाते थे।

(ग) छोटे वृत्त के चहुँ ओर किरणें किसका द्योतक बन गई थी?

उत्तर— छोटे वृत्त के चहुँ ओर किरणें 'सूर्य के चित्र' का द्योतक बन गई थी।

(घ) प्रागैतिहासिक मानव से क्या अर्थ है?

उत्तर— प्रागैतिहासिक मानव से अर्थ है इतिहास से पहले का काल। जब से मनुष्य ने लिखना शुरू किया है तब से इतिहास का पता चलता है। इससे पहले के समय प्रागैतिहासिक काल कहते हैं। अत: उस समय के मानव को प्रागैतिहासिक मानव कहते हैं।

प्रश्न-अभ्यास

निबंध से—

प्रश्न 1. पाठ में ऐसा क्यों कहा गया है कि अक्षरों के साथ एक नए युग की शुरुआत हुई?

उत्तर— पाठ के अनुसार अक्षरों के साथ ही एक नए युग की शुरुआत हुई। अक्षरों के द्वारा आदमी अपने विचार और हिसाब-किताब को लिखकर रखने लगा, वह सभ्य कहलाने लगा। हर बात इतिहास के रूप में लिखी हुई मिलने लगी। किसी भी कौम या देश का इतिहास तब से शुरू हुआ जब से आदमी के लिखे हुए लेख मिलने लगे। अगर आदमी अक्षरों की खोज न करता तो आज हम इतिहास को नहीं जान पाते।

प्रश्न 2. अक्षरों की खोज का सिलसिला कब और कैसे शुरू हुआ? पाठ पढ़कर उत्तर लिखो।

उत्तर— अक्षरों की खोज के सिलसिले को शुरू हुए मुश्किल से छह हजार साल हुए हैं। प्रागैतिहासिक मानव ने सबसे पहले चित्रों के जरिए अपने भाव व्यक्त किए। शुरू में पशुओं, पक्षियों और आदमियों के चित्र-संकेत तो बाद में भाव-संकेत अस्तित्व में आए। जैसे सूर्य के लिए छोटा-सा वृत्त बनाकर चारों ओर रेखाएँ किरणों की द्योतक थी। या यह कह सकते हैं कि सूर्य का यही चित्र 'ताप' और 'धूप' का द्योतक था। ये भाव-संकेत थे। इनके बाद ही अक्षरों के साथ नए युग की शुरुआत हुई।

प्रश्न 3. अक्षरों के ज्ञान से पूर्व मनुष्य अपनी बात को दूर-दराज़ के इलाकों तक पहुँचाने के लिए किन-किन माध्यमों का सहारा लेता था?

उत्तर— अक्षरों के ज्ञान से पूर्व मनुष्य अपनी बात ध्वनि-संकेतों से दूर-दराज़ के इलाकों तक पहुँचाता था। जैसे— आवाज़, ढोल-नगाड़ों की आवाज़, आग या धुएँ के माध्यम का सहारा लेता था।

निबंध से आगे—

प्रश्न 1. अक्षरों के महत्व की तरह ध्वनि के महत्व के बारे में जितना जानते हो, लिखो।

उत्तर— अक्षरों के महत्व की तरह ध्वनि का भी विशेष महत्व रहा है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। सभ्यता के आदिकाल से ही उसका संबंध बाह्य जगत से रहा, इसीलिए उसने मूक अभिव्यक्ति को शब्द दे दिए। शुरू में अपने भावों और विचारों की अभिव्यक्ति के लिए संकेतों, अस्पष्ट ध्वनियों या फिर प्रकृति की अनुकरणीय ध्वनियों का सहारा लिया। धीरे-धीरे ये ध्वनि-समूह ही वस्तु-विशेष के लिए प्रतीक बन गए। कालांतर में वही प्रतीक भाषा बन

गए या कहा जा सकता है कि ''भाषा ध्वनि-प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज में मनुष्य परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।'' ध्वनियों के आगे विकास के बारे में कहा जा सकता है कि ''मौखिक ध्वनियों को अंकित करने के लिए निश्चित चिह्नों की व्यवस्था 'लिपि' कहलाती है''।

प्रश्न 2. मौखिक भाषा का जीवन में क्या महत्व होता है? इस पर शिक्षक के साथ कक्षा में बातचीत करो।

उत्तर— हर बात को लिखकर नहीं बताया जा सकता। छोटा बच्चा अपने बड़ों की बातें सुन-सुन कर पहले बोलना ही सीखता है। समाज में आम बोलचाल में भाषा का मौखिक रूप ही प्रयोग किया जाता है। मौखिक भाषा का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। जिन लोगों को लिखना नहीं आता वे मौखिक भाषा का प्रयोग करते हैं। भाषा का लिखित रूप किसी भी बात को सुरक्षित रखने का एक तरीका है, पर व्यावहारिक रूप में मौखिक भाषा का महत्व ज्यादा है।

प्रश्न 3. हर वैज्ञानिक खोज के साथ किसी-न-किसी वैज्ञानिक का नाम जुड़ा होता है। लेकिन अक्षरों के साथ ऐसा नहीं है, क्यों? पता करो और शिक्षक को बताओ।

उत्तर— संसार में जितनी भी वैज्ञानिक खोजें हुई हैं उनके साथ किसी-न-किसी वैज्ञानिक का नाम जुड़ा होता है। यह किसी खोज विशेष के साथ संभव है; जैसे— ग्राहम बैल ने टेलीफोन का आविष्कार किया या फिर मैडम क्यूरी ने यूरेनियम का। अक्षरों के संबंध में यह संभव नहीं हो सकता क्योंकि अक्षरों का विकास न तो किसी एक व्यक्ति विशेष के द्वारा हुआ है और न ही एक स्थान पर। ऐसी हालत में जहाँ खोज करने वाले भिन्न हैं, विभिन्न समय व देश के हैं, तो फिर एक ही आदमी का नाम कैसे जोड़ा जा सकता है।

प्रश्न 4. एक भाषा को कई लिपियों में लिखा जा सकता है। उसी तरह कई भाषाओं को एक ही लिपि में लिखा जा सकता है। नीचे एक ही बात को अलग-अलग भाषाओं में लिखा गया है। इन्हें ध्यान से देखो और इनमें दिए गए वर्णों की मदद से कोई नया शब्द बनाने की कोशिश करो—

क्या शानदार दिन है!	**हिंदी**		**उर्दू**
	पंजाबी		**बाँग्ला**
	उड़िया		**तमिल**
	तेलुगू		

उत्तर— विद्यार्थी स्वयं करें।

अनुमान और कल्पना—

प्रश्न 1. पुराने ज़माने में लोग यह क्यों सोचते थे कि अक्षर और भाषा की खोज ईश्वर ने की थी? अनुमान लगाओ और बताओ।

उत्तर— जिस प्रकार प्रकृति की सभी चीजें, जैसे— सूर्य, चंद्रमा आदि को भगवान की देन माना जाता रहा उसी प्रकार पुराने ज़माने में लोगों ने अक्षरों की खोज को भी ईश्वर से संबंधित मान लिया। अक्षरों की बनावट भी एक दैविक कृत्य के समान ही है। अक्षरों का ज्ञान बाद में मिला है। भारत में तो विद्या की देवी सरस्वती मानी जाती है। शायद इसी कारण से अक्षरों की खोज को ईश्वर से जोड़ दिया गया होगा।

प्रश्न 2. अक्षरों के महत्त्व के साथ ही मनुष्य के जीवन में गीत, नृत्य और खेलों का भी महत्त्व है। कक्षा में समूह में बातचीत करके इनके महत्त्व के बारे में जानकारी इकट्ठी करो और कक्षा में प्रस्तुत करो?

उत्तर— मानव जीवन में अक्षरों का बहुत महत्व है। अक्षरों के बिना हम आज सभ्य समाज की कल्पना तक नहीं कर सकते। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहने के लिए भाषा का प्रयोग करता है। अगर हम सोचें तो पाते हैं कि अक्षरों के बिना आपसी संबंध संभव ही नहीं है। मनुष्य के जीवन में गीत, नृत्य और खेलों का भी बहुत महत्त्व है। अक्षरों के बिना नृत्य और गीत के लिए सुर-ताल नहीं बनेगी, फिर ऐसे में गीत का अर्थ ही क्या रह जाएगा? इसी प्रकार खेल भी मानव के लिए आवश्यक है, इसमें भी अक्षरों की आवश्यकता होती है।

प्रश्न 3. क्या होता अगर ....

(क) हमारे पास अक्षर न होते (ख) भाषा न होती

उत्तर— (क) अगर हमें अक्षरों का ज्ञान न होता तो हम इस सभ्य समाज के स्थान पर आदिमानव जैसे ही होते। विश्व में जो भी वैज्ञानिक आविष्कार हुए हैं, वे नहीं होते। पहले धरती का विकास हुआ फिर मानव का जन्म। शुरू में आदमी जंगलों में रहता था, कंदमूल फल खाता था। इसके बाद उसने गाँव बसाना शुरू कर दिया और खेती करने लगा, शिकार के लिए पत्थरों के औज़ारों का प्रयोग आरंभ हुआ। यह प्रागैतिहासिक मानव था, जो चित्रों के माध्यम से अपने भाव समझाता था।

(ख) अगर हमारे पास भाषा न होती तो हम अपने मन की बात स्पष्ट रूप से दूसरे को कह नहीं पाते और दूसरे के मन की बात जान नहीं पाते। केवल संकेतों के द्वारा अपने मन की बात को पूर्णत: समझाया नहीं जा सकता। उदाहरण के लिए यदि आपको पानी चाहिए तो आप इशारे से पानी माँग सकते हैं। यदि आपको ठंडा पानी चाहिए तो क्या संकेत करेंगे ? इसलिए भाषा के बिना विचारों का आदान-प्रदान असंभव है।

भाषा की बात—

1. **अनादि काल में रेखांकित शब्द का अर्थ है जिसकी कोई शुरुआत या आदि न हो। यह शब्द मूल शब्द के शुरू में कुछ जोड़ने से बने हैं। इसे 'उपसर्ग' कहते हैं। इन उपसर्गों को अलग करके मूल शब्दों को लिखकर उनका अर्थ समझो—**

असफल — अ + सफल = जो सफल न हो। अदृश्य — अ + दृश्य = जो दिखाई न दे।
अनुचित — अन् + उचित = जो उचित न हो। अनावश्यक — अन् + आवश्यक = जो आवश्यक न हो।
अपरिचित — अ + परिचित = जो परिचित न हो। अनिच्छा — अन् + इच्छा = बिना इच्छा के।

2. वैसे तो संख्याएँ संज्ञा होती हैं, पर कभी-कभी ये विशेषण का काम भी करती हैं, जैसे नीचे लिखे वाक्य में —

- हमारी धरती लगभग **पाँच अरब** साल पुरानी है।
- कोई **दस हज़ार** साल पहले आदमी ने गाँवों को बसाना शुरू किया।

इन वाक्यों में रेखांकित अंश 'साल' संज्ञा के बारे में विशेष जानकारी दे रहे हैं, इसलिए संख्यावाचक विशेषण हैं। संख्यावाचक विशेषण का इस्तेमाल उन्हीं चीज़ों के लिए होता है, जिन्हें गिना जा सके। जैसे— चार संतरे, पाँच बच्चे, तीन शहर आदि। पर यदि किसी चीज़ को गिना नहीं जा सकता तो उसके साथ संख्या वाले शब्दों के अलावा मापतौल आदि के शब्दों का इस्तेमाल भी किया जाता है।

- तीन जग पानी, • एक किलो चीनी

यहाँ रेखांकित हिस्से परिमाणवाचक विशेषण हैं क्योंकि इनका संबंध माप-तोल से है। अब आगे लिखे हुए को पढ़ो। खाली स्थानों में बॉक्स में दिए गए माप-तोल के उचित शब्द छाँटकर लिखो।

प्याला	कटोरी	एकड़	मीटर	लीटर	किलो	ट्रक	चम्मच

उत्तर— तीन कटोरी खीर दो एकड़ ज़मीन छह मीटर कपड़ा एक ट्रक रेत
दो चम्मच कॉफ़ी पाँच किलो बाजरा एक प्याला दूध तीन लीटर तेल

कुछ करने को—

प्रश्न 1. अपनी लिपि के कुछ अक्षरों के बारे में जानकारी इकट्ठी करो—
(क) जो अब प्रयोग में नहीं रहे। (ख) प्रचलित नए अक्षर जो अब प्रयोग में आ गए हैं।

उत्तर— (क) अपनी लिपि के कुछ अक्षर जो अब प्रयोग में नहीं रहे—
अ, ख, छ, झ, ण, ल।
↓ ↓ ↓ ↓ ↓ ↓
अ ख छ झ ण ल

(ख) उपर्युक्त अक्षरों के स्थान पर प्रचलित नए अक्षर जो अब प्रयोग में आ गए हैं—
अ, ख, छ, झ, ण, ल।

प्रश्न 2. लिखित और मौखिक भाषा के हानि-लाभ के बारे में दोस्तों के बीच चर्चा करो।

उत्तर— लिखित भाषा : लिखित भाषा के लाभ में सर्वप्रथम आता है कि जब से मनुष्य ने लिखना आरंभ किया है उसका इतिहास सुरक्षित हो गया। वह सभ्य कहलाने लगा। हमारे पूर्वजों के साथ जो भी घटनाएँ घटीं उनसे हम सीख ले सकते हैं। आज मानव ने विज्ञान के क्षेत्र में जो उन्नति की है, वह लिखित भाषा से ही संभव हुई है। किसी भी क्षेत्र में खोज का कोई कार्य होता है तो आने वाली पीढ़ियाँ उस काम को आगे बढ़ाने का कार्य करती हैं। अनेक लाभ होने के साथ-साथ कुछ हानियाँ भी हैं जैसे जो भी हम इतिहास में लिखा हुआ पाते हैं उसमें कुछ बातें ऐसी होती हैं जिनके दो अर्थ भी निकलते हैं। ऐसी स्थिति में यह निर्णय लेना कठिन हो जाता है कि लिखने वाले ने यह सब क्या सोचकर लिखा।

मौखिक भाषा : भाषा के रूप में मौखिक भाषा का अपना महत्व है। इस संसार में ज्यादातर काम मौखिक रूप में ही होते हैं। बच्चा जब बोलना सीखता है तो वह मौखिक भाषा का प्रयोग ही करता है। जो लोग पढ़ना-लिखना नहीं जानते वे मौखिक भाषा के द्वारा ही अपने भावों की अभिव्यक्ति करते हैं। मौखिक रूप में टेलीफोन, टेलीविज़न, रेडियो द्वारा एक बात या समाचार कुछ ही क्षणों में दुनिया हर कोने तक पहुँच जाता है। अगर ये सारी बातें लिखकर ही ऐसे एक-दूसरे तक पहुँचाना चाहें तो असंभव होगा। समाज में रहते हुए गीत, नृत्य, खेल, मनोरंजन, सिनेमा ये सब मौखिक रूप में ही देखे, सुने या कहे जा सकते हैं। इन चीजों को सुनने या देखने में जितना आनंद आता है उतनी लिखी हुई चीजें पढ़ने में नहीं। इन लाभों के साथ कुछ हानियाँ भी हैं। आज मौखिक भाषा के साहित्य या ज्ञान को मूल रूप में सुरक्षित व संचित रखा जा सकता। लेकिन, इसमें फ़ेरबदल किया जा सकता है।

प्रश्न 3. अक्षर ध्वनियों (स्वरों और व्यंजनों) के प्रतीक होते हैं। उदाहरण के लिए 'हिंदी', 'उर्दू' और 'बाँग्ला' आदि शब्दों में प्रत्येक अक्षर के लिए उसकी ध्वनि निर्धारित है। कुछ चित्रों से भी संकेत व्यक्त होते हैं। नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं। उनसे क्या संकेत व्यक्त होते हैं, बताओ—

उत्तर— दाएँ मुड़ना, बाएँ मुड़ना, आगे स्कूल है, गोल चक्कर।

प्रश्न 4. अपने आसपास के किसी मूक-बधिर बच्चों के स्कूल में जाकर कुछ समय बिताओ और अपने अनुभव लिखो?

उत्तर—विद्यार्थी स्वयं करें।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

लघूत्तरात्मक प्रश्नोत्तर—

प्रश्न 1. अगर अक्षर न होते तो क्या इतनी पुस्तकें छपती?

उत्तर— दुनिया में अब तक करोड़ों पुस्तकें छप चुकी हैं। हजारों पुस्तकें रोज छपती हैं। अगर अक्षर न होते तो हम इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते थे और न ही इतनी पुस्तकें छपती।

प्रश्न 2. शुरू में मानव कैसे औज़ार इस्तेमाल करता था?

उत्तर— शुरू में मानव पत्थरों के औज़ार इस्तेमाल करता था।

प्रश्न 3. प्रागैतिहासिक मानव अपने भाव कैसे व्यक्त करता था?

उत्तर— प्रागैतिहासिक मानव पक्षियों, पशुओं तथा आदमियों के चित्रों से अपने भाव व्यक्त करता था।

प्रश्न 4. अक्षरों की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है, क्यों?

उत्तर— अक्षरों की खोज मनुष्य की सबसे बड़ी खोज है क्योंकि इसी के द्वारा विचारों और ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस्तेमाल किया जाने लगा। ज्ञान को सुरक्षित रखा गया।

प्रश्न 5. हमारी राष्ट्रलिपि कौन-सी है? मराठी और नेपाली भाषाओं की लिपि का नाम बताओ।

उत्तर— हमारी राष्ट्रलिपि देवनागरी है। मराठी और नेपाली भाषाओं की लिपि भी देवनागरी ही है।

प्रश्न 6. हमारे पड़ोसी देशों जैसे—श्रीलंका और तिब्बत की लिपियाँ मूल रूप से कौन-सी लिपि से निकली हैं?

उत्तर— हमारे पड़ोसी देशों जैसे— श्रीलंका की सिंहली लिपि और तिब्बत की तिब्बती लिपि भी ब्राह्मी लिपि से

ही निकली है।

प्रश्न 7. भारतीय लिपियों की माता किसे कहा गया है?

उत्तर— आज की सारी भारतीय लिपियों की माता एक ही है वह है ब्राह्मी लिपि।

प्रश्न 8. आज दुनिया भर में लगभग कितनी लिपियाँ पढ़ी और लिखी जाती हैं?

उत्तर— आज दुनिया भर में लगभग 400 तरह की लिपियाँ लिखी और पढ़ी जाती हैं।

प्रश्न 9. मरी हुई लिपियाँ किसे कहा गया है? इनके बारे में हमें कैसे पता चलता है?

उत्तर— कुछ लिपियाँ जिनका विकास नहीं हुआ, उन्हें मरी हुई लिपियाँ कहा गया है। इन लिपियों के नमूने आज संसार के बड़े-बड़े संग्रहालयों में देखने को मिलते हैं।

प्रश्न 10. पुराने ज़माने में लिपियों में अक्षरों की संख्या कितनी होती थी?

उत्तर— पुराने ज़माने में लिपियों में सैकड़ों अक्षर हुआ करते थे।

प्रश्न 11. ब्राह्मी लिपि का प्रयोग कब आरंभ हुआ?

उत्तर— ब्राह्मी लिपि का प्रयोग आज से करीब 2250 साल पहले हुआ।

निबंधात्मक प्रश्नोत्तर—

प्रश्न 1. अक्षर और कंप्यूटर के संबंधों के बारे में जानकारी प्राप्त करो और इसे शिक्षक को सुनाओ।

उत्तर— आज का युग विज्ञान और कंप्यूटर का युग है। ऐसी दशा में तो अक्षर और कंप्यूटर का संबंध और गहरा हो जाता है। कंप्यूटर को चलाने के लिए कुछ अक्षर (चिह्नों) का प्रयोग किया जाता है। जो कुछ भी लिखा जाता है, वह अक्षरों की मदद से ही संभव है।

प्रश्न 2. मनुष्य की प्रगति का क्या रहस्य है?

उत्तर— मनुष्य की प्रगति का रहस्य है उसका अक्षर ज्ञान। अक्षर ज्ञान मानव-समाज की प्रगति का मूल मंत्र है। अक्षर ज्ञान के साथ ही मानव का विकास प्रारंभ हो गया था। अक्षर ज्ञान के कारण आज हम ज्ञान-विज्ञान को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। अक्षर ज्ञान से ही एक पीढी का ज्ञान दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता है। अक्षर ज्ञान ही हमारे इतिहास का आधार है। आज हमने जितनी भी प्रगति की है। उसका मुख्य कारण है अक्षर ज्ञान।

- **बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर—**

1. 'अक्षरों का महत्त्व' निबंध के लेखक कौन हैं—
(क) गुणाकर मुले (ग) विष्णु प्रभाकर
(ख) मुंशी प्रेमचंद (घ) कृष्णा सोबती

2. पुस्तक किनसे बनती है—
(क) शब्दों से (ग) अक्षरों से
(ख) प्रेस से (घ) पत्रों से

3. कुछ लोगों के अनुसार अक्षरों का ज्ञान हमें किससे मिला है—
(क) अध्यापकों से (ग) ईश्वर से
(ख) पुस्तकों से (घ) गुरु से

4. हमारी धरती लगभग कितने साल पुरानी है—
(क) दो अरब साल (ग) पाँच सौ अरब साल
(ख) दो सौ अरब साल (घ) पाँच अरब साल

5. पुस्तक तथा समाचार-पत्र के मूल में क्या है—
(क) अक्षर (ग) कहानी
(ख) अखबार (घ) घटना

6. अक्षरों की खोज वास्तव में किसने की है—
(क) ईश्वर ने (ग) अध्यापक ने
(ख) मनुष्य ने (घ) इनमें से किसी ने नहीं

7. मनुष्य ने इस धरती पर कितने साल पहले जन्म लिया—
(क) कोई पाँच लाख साल
(ख) कोई एक लाख साल
(ग) कोई दो लाख साल
(घ) कोई दस लाख साल

8. जानवरों और वनस्पतियों का राज्य धरती पर कितने साल तक रहा—
(क) अरबों साल (ग) हजारों साल
(ख) करोड़ों साल (घ) सैकड़ों साल

9. अक्षरों की खोज के साथ किसकी शुरूआत हुई—
(क) आदि युग की (ग) शुरु के साल की
(ख) प्राचीन युग की (घ) नए युग की

उत्तर— 1. (क), 2. (ग), 3. (ग), 4. (घ), 5. (क), 6. (ख), 7. (क), 8. (ख), 9. (घ)।